पंडित जवाहरलाल नेहरु के सम्पूर्ण विचार pdf download

इस लेख में पंडित जवाहरलाल नेहरु के राजनीतिक विचार, आर्थिक विचार, विदेश नीति, आर्थिक विचार तथा समाजवादी विचार पर चर्चा करेंगे जिससे कि पाठक या विध्यार्थी यह समझ करें कि नेहरु जी की विचारधारा क्या था? इनको किस तरह के भारत का निर्माण करना था और पहली तथा दूसरी पंचवर्षीय योजना में कर्षि तथा उद्योगों पर कार्य क्यों किया?

जीवन परिचय 1889 -1964

पंडित जवाहरलाल नेहरु का जन्म 14 नवम्बर 1989 को प्रयाग, इलाहाबाद में हुआ था, इलाहबाद का पहले नाम अलाहाबाद हुआ करता था, उनके पिता प्रसिद्ध वकील थे नेहरु जी की प्रारंभिक शिक्षा का प्रबंध उनके घर पर ही हुआ था लेकिन जैसे ही यह 15 वर्ष के हुए, उन्हें इग्लैंड भेज दिया गया जहाँ इग्लेंड के हैरो स्कूल और कैम्ब्रिज में दाखिला कराया गया |

वर्ष 1912 में, नेहरु जी अपनी वकालत की पढ़ाई पूरी भारत लौटे| इन्होने अपनी पढ़ाई के दौरान इंग्लैंड से ही आजादी और देश प्रेम की भावना जागृत हो गयी थी और जैसे ही भारत आये वसे ही वकालत शुरू की परन्तु उसमें उनका मन नहीं लगा क्योंकि वह अपने देश को आजाद देखना चाहते थे, सन 1915 में उनका विवाह कमला जी से हुआ|

जवाहरलाल नेहरु की प्रमुख रचनायें:-

इनकी प्रमुख रचनाएँ इस प्रकार हैं –

1- The discovery of India -1946
2- Hindustan Ki kahani
3- Pita ke Petra (Letters from father to his daughter)
4- Glimpses of world History- 1934

जवाहरलाल नेहरु का राजनैतिक जीवन :-

1- सन् 1919 जे रॉलेट एक्ट और अमृतसर के जलियांवाला बाग़ हत्याकांड के बाद नेहरु अपने पिता मोतीलाल नेहरु और अन्य बड़े राजनैतिक नेताओं के साथ मिलकर शेत्र में कूंद पड़े, और सितंबर 1920 से 1922 के बीच महात्मा गांधी जी जे असहयोग आंदोलन में भी पंडित जवाहरलाल नेहरु ने भाग लिया | असहयोग आंदोलन के चलते इनको जेल भी जाना पड़ा था |

journalismology

2- सन् 1929 को लाहौर के कांग्रेस अधिवेशन में जवाहलाल नेहरु को कांग्रेस का मुख चुना गया तथा 26 जनवरी 1929 को उन्होंने रावी नदी के किनारे तिरंगा झंडे को लहराते हुए, उस दिन स्वतंत्रता पाने का ऐलान किया |
3- सन् 1929 में नेहरु जी ने अंग्रेजो- भारत छोडो का नारा उठाया जो बात ब्रिटिश सरकार को पसंद न आई और उन्होंने उनको जेल में डाल दिया

जवाहरलाल नेहरु पर प्रभाव

1- पिता मोतीलाल नेहरु
2- महात्मा गांधी
3- एनी बेसेंट
4- कार्ल मार्क्स
5- रसेल
6- लेनिन
7- आइन्स्टाइन

जवाहरलाल नेहरु के राजनीतिक विचार

1- नेहरु जी का लोकतंत्र में अटूट विश्वास था उनका मानना था कि लोकतंत्र आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक विषमताओं के चलते सफल नहीं हो सकता इसलिए यह संसदीय लोकतंत्र के पूर्ण पक्षधर थे और वे संसद को सर्वोच्च मानते थे |
2- पंडित जवाहरलाल नेहरु का राष्ट्रवाद, आदर्शवाद पर आधारित है उग्रवाद पर नहीं, यह किसी धर्म, जाति, संस्कृति या समुदाय पर आधारित न होकर सर्वहित पर आधारित है |
3- उनका मानना था कि "हर गुलाम देश के लिए राष्ट्रवाद की भावना से ओत-प्रोत होना सर्वथा स्वाभाविक है| एक पराधीन देश के लिए शांति का कोई अर्थ नहीं क्योकि शांति तो स्वतंत्रता के बाद ही स्थापित हो सकती है इसलिए सामाज्यों को मिटा देना चाहिए उनका जमाना बीत चुका है" |
4- नेहरु जी राष्ट्रवाद को एक परम्परागत शक्ति के रूप में स्वीकारते है, उसे वे भावात्मक वस्तु मानते है जो लोगो को जोड़े रखती है इसके साथ-साथ उनका मानना यदि राष्ट्रीयता का आधार धर्म है तो भारत में एक राष्ट्र नहीं बल्कि अनेकों राष्ट्र मौजूद है |
5- महत्वपूर्ण बात यह है कि पंडित जवाहरलाल नेहरु घोर मानवतावादी थे, ये हिटलर और मुसोलनी के राष्ट्रवाद से पूणतः अवगत थे कि किस प्रकार इन्होने धर्म और राष्ट्रवाद के नाम लाखों लोगों को मरवा दया था इसलिए यह राष्ट्रवाद के स्थान पर अन्तराष्ट्रवाद का समर्थन करते थे |
6- नेहरु जी धर्म –नीरपेक्षता और वैज्ञानिक द्रष्टिकोण के समर्थक थे |

journalismology

विदेश नीति

इनको भारतीय विदेश नीति का पितामह माना जाता है इनकी विदेश नीति से इनके विचारों की झलक मिलती है तथा नेहरु जी की विदेश नीति में गुट निरपेक्षता, पंचशील,साम्राज्यवाद का विरोध, अंतराष्ट्रीय संगठनों द्वारा विश्व का संचालन इत्यादि प्रमुख है |

आर्थिक विचार

1- नेहरु जी मिश्रित अर्थव्यवस्था के समर्थक थे इसलिए उन्होंने पूँजीवाद और समाजवाद के समन्वय को स्थापित किया और इसके लिए उन्होंने योजनाबृद्ध विकास के लिए पंचवर्षीय योजना का प्रारंभ किया|
2- कृषि और औद्योगीकरण के विकास के लिए क्रमशः प्रथम, द्वितीय पंचवर्षीय योजना में स्थान दिया |
3- ग्रामीण विकास के लिए उन्होंने सामुदायिक विकास कार्यक्रमों की शुरुआत की |
4- नेहरु जी कल्याणकारी राज्य के समर्थक थे |

समाजवादी विचार

1- पंडित जवाहरलाल नेहरु समाजंवादी विचारधारा के सशक्त समर्थक थे उनका समाजवाद एक जीवन दर्शन था तथा यह आर्थिक दर्शन समाजवाद से प्रेरित थे |
2- 1958 में आवड़ी सम्मेलन में कांग्रेस में समाजवादी ढांचे को अपनाया था तथा इसी वर्ष 1958 में ही उन्होंने स्पष्ट कहा था कि “मै ऐसा उग्र प्रकार का समाजवाद नहीं चाहता जिसमें राज्य सर्व-शक्तिमान होता है और प्रायःसब कार्य-कलापों का संचालन करता है |
3- राजनीतिक द्रष्टि से राज्य बहुत संपन्न होता है अतः मैं आर्थिक शक्ति के विकेंद्रीकरण की योजना के आदर्श रूप को भारतीय जन-जीवन के लिए व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करना चाहता हूँ”|
4- पंडित मार्क्स एवं लेनिन के विचारों से बहुत प्रभावित थे परंतु उन्हें पूर्ण मार्क्सवादी नहीं माना जा सकता क्योंकि वे हिंसा के समर्थन में नहीं थे |
5- उन्होंने कहा कि “मार्क्सवाद ने मेरे दिमाग के अनेक कोनों को प्रकाशित कर दिया” | “भारत की खोज में उन्होंने लिखा है मार्क्स तथा लेनिन ने मेरे मन पर शक्तिशाली प्रभाव डाला और मुझे इतिहास तथा सामाजिक घटनाओं की एक नई द्रष्टि देखने में सहायता दी”|

journalismology